ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम विषय-हिन्दी

दिनांक—24/04/2021 महायज्ञ का पुरस्कार -यशपाल जैन

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

संक्षिप्त लेखक:

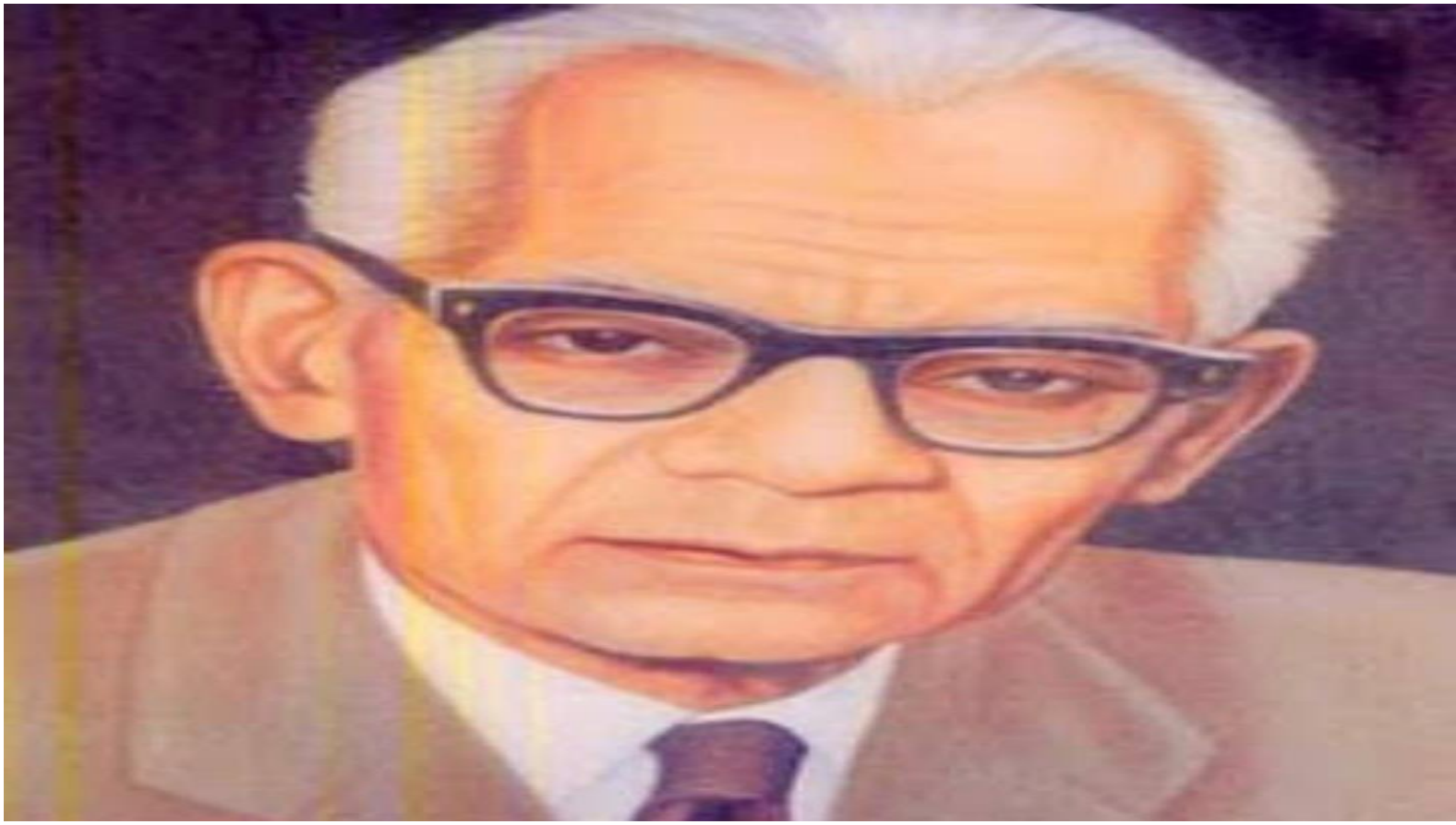
~~~~~~~~~~

यशपाल

जन्म- 3 दिसम्बर, 1903 ई., फ़िरोजपुर छावनी

मृत्यु- 26 दिसंबर, 1976

यशपाल जैन हिन्दी के यशस्वी कथाकार और निबन्ध लेखक हैं। यशपाल राजनीतिक तथा साहित्यिक, दोनों क्षेत्रों में क्रान्तिकारी हैं। उनके लिए राजनीति तथा साहित्य दोनों साधन हैं और एक ही लक्ष्य की पूर्ति में सहायक हैं।इनके पूर्वज कांगड़ा ज़िले के निवासी थे और इनके पिता 'हीरालाल' को विरासत के रूप में दो-चार सौ गज़ तथा एक कच्चे मकान के अतिरिक्त और कुछ नहीं प्राप्त हुआ था।
इनकी माँ प्रेमदेवी ने उन्हें आर्य समाज का तेजस्वी प्रचारक बनाने की दृष्टि से शिक्षार्थ 'गुरुकुल कांगड़ी' भेज दिया। गुरुकुल के राष्ट्रीय वातावरण में बालक यशपाल के मन में विदेशी शासन के प्रति विरोध की भावना भर गयी। शिक्षार्थ 'गुरुकुल कांगड़ी' भेज दिया। गुरुकुल के राष्ट्रीय वातावरण में बालक यशपाल के मन में विदेशी शासन के प्रति विरोध की भावना भर गयी।

कर्म-क्षेत्र	उपन्यासकार, लेखक, निबंधकार
मुख्य रचनाएँ	'वो दुनिया', 'दिव्या', 'देशद्रोही', 'फूलों का कुर्ता', 'पिंजरे की उड़ान', 'ज्ञानदान' आदि।
विद्यालय	गुरुकुल कांगड़ी, नेशनल कॉलेज, लाहौर
पुरस्कार-उपाधि	'देव पुरस्कार' (1955), 'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार' (1970), 'मंगला प्रसाद पारितोषिक' (1971) तथा 'पद्म भूषण'